Dr. Sharwan Kumar, Assistant Professor, N.G.B.(Deemed to be University)., Prayagraj

अभिप्रेरणा
(Motivation)

द्वारा

डॉ0 श्रवण कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (बी0एड0)

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),

प्रयागराज

Dr. Sharwan Kumar, *Assistant Professor, N.G.B.(Deemed to be University)., Prayagraj*

अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा अंग्रेजी के 'मोटीवेशन' (Motivation) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा की मोटम (Motum) धातु से हुई है, जिसका अर्थ है– मूव मोटर (Move Motor) और मोशन (Motion)।

अभिप्रेरणा एक ऐसी सामाजिक अभिप्रेरक है। इस अभिप्रेरक से प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को सुचारू रूप से करने का प्रयास करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता प्राप्त हो। वास्तव में यह एक आन्तरिक शक्ति होती हो जो प्राणी को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य को करने के लिए प्रेरित करती हैं। अभिप्रेरणा को प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा देखा जाना सम्भव नहीं हो पाता हैं प्राणी के व्यवहार का अवलोकन करके उसकी अभिप्रेरणा को समझा जा सकता है। डार्ले के अनुसार, शैक्षिक अभिप्रेरणा को व्यक्ति की ऐसी इच्छा के रूप में परिभाषित किया जाताहै, जिस वजह से वह उत्कर्ष प्राप्त करना चाहता है, जटिल कार्यों को सम्पादित करना है, उच्च प्रतिमान अर्जित करना है और लोगों को प्रतिस्पर्धा में पीछे करना चाहता है। मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा शब्दों को भिन्न–भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। **गुड के अनुसार** – ''अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने जारी रखने अथवा नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।''

अभिप्रेरणा में व्यक्ति का व्यवहार लक्ष्य निर्देशित होता है अर्थात् अभिप्रेरित व्यवहार को कोई न कोई स्पष्ट लक्ष्य अथवा उद्देश्य अवश्य होता है तथा प्राणी उस उद्देश्य की प्राप्ति करने के लिए क्रियाशील तथा प्रयासरत है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अभिप्रेरणा प्राणी में ऊर्जा परिवर्तन लाती है। व्यक्ति का अभिप्रेरित व्यवहार उसके सामान्य व्यवहार की तुलना में अधिक प्रबल होता है अर्थात् अभिप्रेरित अवस्था में प्राणी अधिक उत्तेजित, अधिक क्रियाशील तथा अधिक

उर्जित होता है। अभिप्रेरित व्यवहार की प्रकृति चयनात्मक होती है अर्थात् अभिप्रेरित अवस्था में प्राणी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कुछ चयनित प्रतिक्रियायें ही करता है। अभिप्रेरित व्यवहार में निरन्तरता होती है अर्थात् अभिप्रेरित व्यवहार में निरन्तरता होती है अर्थात् अभिप्रेरित व्यवहार एक बार उत्पन्न होने के बाद तब तक निरन्तर चलता रहता है जब तक प्राणी अपने वांछित उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर लेता है। अभिप्रेरणा में भावात्मक उत्तेजना पाई जाती है जिसके कारण प्राणी में एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक तनाव उत्पन्न हो जाता है। प्राणी इस तनाव को दूर करने के लिए सतत प्रयासरत रहता है। अभिप्रेरणा का तनाव ही प्राणी को सकारात्मक दिशा में प्रयास करने के लिए अग्रसरित करता है।

अभिप्रेरणा की परिभाषा–

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन के अनुसार, ''प्रेरणा एक प्रक्रिया है, जिसमें सीखने वाले की आन्तरिक शक्तियाँ या आवश्यकताएँ उसके वातावरण में विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है।''

मैकडोनाल्ड के अनुसार, ''अभिप्रेरणा व्यक्ति के अन्दर उर्जा परिवर्तन है जो भावात्मक जागृति तथा पूर्व अपेक्षित उद्देश्य अनुक्रियाओं से निर्धारित होता है।''

मैक्लीलैण्ड तथा एटकिन्सन ने शैक्षिक अभिप्रेरक पर सबसे अधिक अध्ययन किए तथा सबसे अधिक महत्त्व भी इन्हीं दोनों मनोवैज्ञानिकों ने प्रदान किया।

उपयुक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं–

1. किसी भी प्रतियोगिता में उच्च स्थान पाने हेतु प्रयास करना।
2. अपने आप चुने गये क्षेत्रों में सफल होने के लिए कोशिश करना।

3. व्यवहार के किसी भी क्षेत्र में उच्च स्तर को प्राप्त करना।
4. व्यक्ति को अपने जीवन में अधिक से अधिक उन्नति करने का प्रयत्न करना।
5. अपने कार्यों में सफल न होने पर उस विफलता का उत्तरदायी स्वयं को मानना।
6. किसी क्षेत्र या लक्ष्य की प्राप्ति हो जाने पर अपनी सफलता पर प्रसन्न होना तथा गर्व करना।

प्रेरणा के प्रकार (Kinds of Motivation)

अभिप्रेरणा के दो प्रकार है–

(1) सकारात्मक और नकारात्मक

अभिप्रेरणा के लिए कई शब्दों का प्रयोग किया जाता है अभिप्रेरणा के कई शब्द ऐसे है जो अन्य अर्थ रखते हैं–

1. **प्रेरक–** यह व्यक्ति के अन्दर उपस्थित मनो–शारीरिक दशा को किसी कार्य विशेष के लिए प्रेरित करता है।
2. **प्रणोंदन–** प्रणोंदन का सम्बन्ध शरीर की आवश्यकताओं से है प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताएँ उसे कार्य करने की प्रेरणा देती है, मनुष्य को भूख प्यास लगाना इसी का संकेत है।
3. **प्रोत्साहन–** निश्चित वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न करता है इसका सम्बन्धी बाहरी वातावरण से माना जाता है।
4. **उत्सुकता–** उत्सुकता के द्वारा व्यक्ति किसी कार्य को सम्पन्न करने को अभिप्रेरित होता है बिना उत्सुक हुए किसी कार्य की सम्पन्नता संभव नहीं

है उत्सुकता व्यक्ति में अन्वेषण वृति तथा जानने के प्रयास को सफलता की और अग्रसर करती है।

5. **रूचि–** प्रत्येक कार्य में प्रत्येक व्यक्ति की रूचि नहीं होती रूचि सभी की पृथक् पृथक् होती है अतः रूचि के अनुसार ही व्यक्ति अपनी कार्य की सफलता निश्चित करता है अतः रूचि प्रेरणा का पर्याय बन जाती है।
6. **लक्ष्य–** लक्ष्य व्यक्ति को परिणाम के सम्बन्ध में सूचित करता है इसे व्यक्ति को परिणाम के सम्बन्ध करता है इसे व्यक्ति चेतनावस्था में प्राप्त करता है।

प्रेरणा के स्रोत

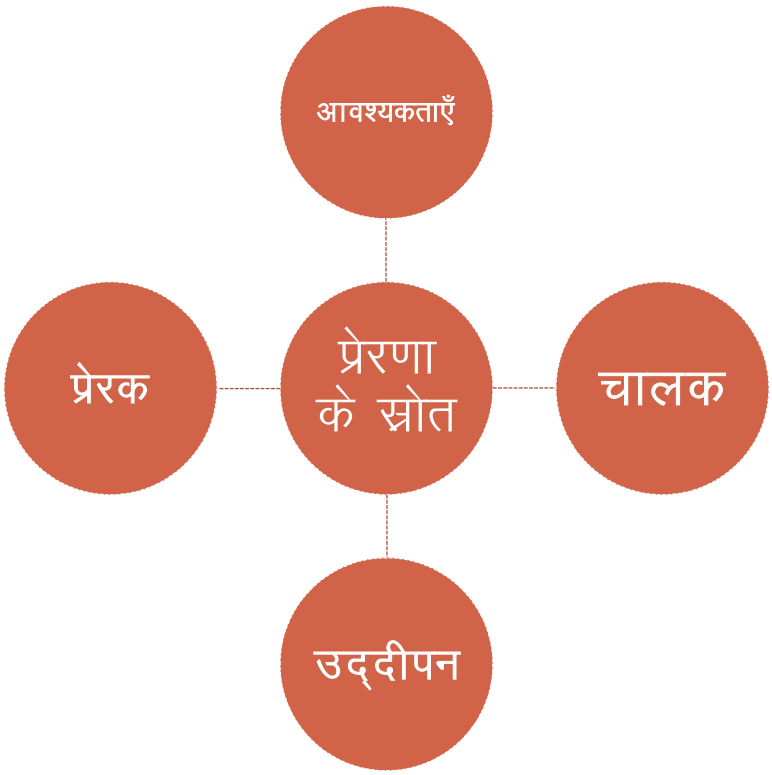

प्रेरक का वर्गीकरण

मैसलो के अनुसार–	(1) जन्मजात	(2) अर्जित
थामसन के अनुसार–	(1) स्वाभाविक	(2) कृत्रिम

(1) जन्मजात प्रेरक–	भूख, प्यास, काम, निद्रा, विश्राम
(2) अर्जित प्रेरक–	रुचि, आदत, सामुदायिकता
(3) मनोवैज्ञानिक प्रेरक–	क्रोध, भय, प्रेम, दुःख, आनन्द
(4) सामाजिक प्रेरक–	आत्म–सुरक्षा, आत्म–प्रदर्शन, जिज्ञासा, रचनात्मकता

सीखने में अभिप्रेरणा का स्थान

1. बाल–व्यवहार में परिवर्तन
2. चरित्र–निर्माण में सहायता
3. ध्यान केन्द्रित करने में सहायता
4. मानसिक विकास
5. रुचि का विकास
6. अनुशासन की भावना का विकास
7. सामाजिक गुणों का विकास
8. अधिक ज्ञान का अर्जन
9. तीव्र गति से ज्ञान का अर्जन
10. व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार प्रगति

विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने की विधियाँ–

कक्षा शिक्षण में प्रेरणा का अत्यन्त महत्त्व है कक्षा में पड़ने के लिए विद्यार्थियों को निरन्तर प्रेरित किया जाना चाहिए प्रेरणा की प्रक्रिया में वे अनेक कार्य करते है जिसके फलस्वरूप विभिन्न छात्रों का व्यवहार भिन्न हो जाता है। मरेसल ने लिखा है कि– ''अभिप्रेरण यह निश्चय करती है कि लोग कितनी अच्छी तरह से सीख सकते हैं और कितनी देर तक सीखते रहते हैं।'' सीखने के कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करना आवश्यक है। अभिप्रेरणा प्रदान करने की निम्नलिखित विधियाँ हैं–

1. **रूचि–** विद्यार्थियों के आन्तरिक रूचि का बढ़ाने के पाठ्यक्रम के प्रति रूचि उत्पन्न करना तथा पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार करना कि जिससे

विद्यार्थियों को रूचि के साथ–साथ उनके शैक्षिक अभिप्रेरण एवं शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च हो सकें।

2. **सफलता–** अध्यापक को सदैव यह प्रयास करना चाहिए कि विद्यार्थियों को सीखने वाले कार्य में सफलता प्राप्त हो। फ्रेन्डसन का कथन है– ''सीखने के सफल अनुभव अधिक सीखने की प्रेरणा देते है।'' अतः कहा जा सकता है कि लक्ष्य की प्राप्त अभिप्रेरणा में वृद्धि करता है। जहाँ विद्यार्थियों अपने उपलब्धि में सफलता प्राप्त करते हैं वहीं उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा में वृद्धि होती है।
3. **प्रतिद्वन्द्विता–** विद्यार्थियों में प्रतिद्वन्द्विता की भाव का विकास करना चाहिए एवं विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा के लिए प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थियों में ऐसी भावना का विकास चाहिए जिससे वे अपने शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के साथ–साथ दूसरे से द्वेषभावना में वृद्धि न हो तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक–दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करते रहें।
4. **सामूहिक कार्य–** सामूहिक कार्य भी अभिप्रेरणा में वृद्धि करती है। विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से कार्य में भाग लेने के अवसर प्रदान करने में भी उन्हें प्रेरणा प्राप्त होती है। कक्षा–शिक्षण खेल आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। वर्तमान समय में होने वाली प्रतियोगिताओं द्वारा विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने का साधन बनाया गया है।
5. **प्रशंसा–** विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा में वृद्धि के लिए शिक्षकों को उनकी प्रशंसा करनी चाहिए। प्रशंसा एक ऐसा कारक है जिससे विद्यार्थियों में सबसे अधिक शैक्षिक अभिप्रेरणा उत्पन्न होती है। फ्रैन्डसन के शब्दों में–

''उचित समय और स्थान पर प्रयोग किये जाने पर प्रशंसा प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण कारक है।''[1]

6. **आवश्यकता का ज्ञान**
7. परिणाम का ज्ञान
8. खेल–विधि का प्रयोग
9. सामाजिक कार्यों में भाग
10. कक्षा का वातावरण

अभिप्रेरणा के गुण–

1. अभिप्रेरणा में क्रियाशीलता होती है।
2. अभिप्रेरणा साध्य तक पहुँचने का मार्ग बताती है।
3. अभिप्रेरणा साध्य न होकर साधन है।
4. अभिप्रेरणा पर शारीरिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है।
5. अभिप्रेरणा से व्यक्ति का व्यवहार प्रभावित होता है।
6. अभिप्रेरणा सीखने का मुख्य अंग न होकर सहायक अंग मात्र है।

अभिप्रेरणा की विशेषताएँ–

''अभिप्रेरणा व्यक्ति में एक ऊर्जा परिवर्तन हैं जो कि भावात्मक जागृति तथा पूर्व अनुमान उद्देश्य सम्बन्धों द्वारा विशेषित होती है।''

शैक्षिक अभिप्रेरण से युक्त व्यक्तियों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. प्रेरणा एक मनो शारीरिक एवं आन्तरिक प्रक्रिया है।
2. प्रेरणा जन्मजात अथवा अर्जित होती है।

---

1 अध्यापक–पात्रता परीक्षा (अधिगम एवं शिक्षाशास्त्र), उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ0 11।

3. यह आन्तरिक प्रक्रिया किसी आवश्यकता की उपस्थित से उत्पन्न होती है।
4. यह व्यक्ति की वह अवस्था होती है जो किन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित करती है।
5. ऐसे व्यक्तियों की आकांक्षा स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा होताहै परन्तु वे उसे ऐसी स्थिति में रखते हैं, जहाँ अत्यधिक खतरा न हो।
6. उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य में वह अधिक दृढ़ता दिखाते हैं।
7. ये अपनी सफलता से अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।
8. वह काम में अधिक निपुणता दिखाते हैं और उनका कार्य स्तर ऊँचा होता है।
9. दूसरों से आगे बढ़ने की इच्छा उसमें सशक्त होती है और भौतिक सफलता के क्षेत्र में वे अत्यधिक चमकते हैं।
10. उनमें सफलता प्राप्त करने की अत्यधिक चिन्ता होती है।
11. भौतिक दृष्टिकोण तथा उच्च पूँजीपति वर्ग से सम्बन्धित व्यक्तियों में प्रायः उपलब्धि अभिप्रेरणा की अधिक पायी जाती है।

अभिप्रेरणा का प्रभावित करने वाले कारक–

विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं–

1. पारिवारिक वातावरण–

बालक के भविष्य निर्माण में उसके पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का विशेष महत्व होता है। पारिवारिक वातावरण बालक पर जन्म से पूर्व ही अपना प्रभाव स्थापित करने लगता है। माध्यमिक पर अध्ययनरत् विद्यार्थी पूर्णतया परिवार

पर ही आश्रित रहता है, इसके उपरान्त वह समाज के सम्पर्क में आता है, फलस्वरूप सामाजिक वातावरण भी बालक पर अपना प्रभाव स्थापित करने लगता है किन्तु, इस अवस्था में भी बालक पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव समाप्त नहीं होता है वरन् सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण की अहम भूमिका होती है। विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा में परिवार का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ता है। जहाँ बच्चों को माता–पिता, दादा–दादी एवं परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा शिक्षा के प्रति अभिप्रेरित किया जाता है उनमें शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में वृद्धि होना स्वाभाविक है एवं जहाँ कलहपूर्ण पारिवारिक वातावरण होता है एवं बच्चों पर ध्यान नहीं दिया जाता है उनमें अभिप्रेरणा की कमी पाया जाना स्वाभाविक है।

2. विद्यालयी वातावरण–

विद्यालय का शैक्षिक वातावरण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक अभिप्रेरणा को भी प्रभावित करता है। अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को कार्य में सफल होने और लक्ष्य पाने की इच्छा को प्रोत्साहित करती है। विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए आंतरिक प्रेरणा का प्रयोग होना चाहिए जिससे वे स्वयं अपनी इच्छा से कार्य कर सकें। जब कोई भी किसी की अन्तर्निहित क्षमताओं का आकलन कर उसे उनसे परिचित कराकर लक्ष्यपूर्ति हेतु प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है तो निश्चित ही वह उसकी सुप्त इच्छा शक्ति को जागृत करता है, जिससे उसे अभिप्रेरणा प्राप्त होती है। जहाँ विद्यालय में शिक्षकों द्वारा बच्चों को अभिप्रेरित किया जाता है उनमें शैक्षिक अभिप्रेरणा के साथ–साथ उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक प्रभाव पाया जाता है। वर्तमान में सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा केवल पढ़ाने से मतलब रखा जाता है वहीं गैर सरकारी विद्यालयों एवं असहायता प्राप्त विद्यालयों में

विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए शिक्षकों द्वारा समय–समय पर मार्गदर्शन, उनके शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए काउन्सिंग एवं नये–नये खेलों का आयोजन कर उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। **3. सामाजिक–आर्थिक स्तर–**

सामाजिक–आर्थिक स्तर का भी बच्चों के शैक्षिक अभिप्रेरणा पर प्रभाव डालता है। जहाँ एक तरफ देखा जाता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के बच्चे उच्च शिक्षा ग्रहण करते है वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन ज्यादा देखने को मिलता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिवार में विद्यार्थियों को शैक्षणिक सामग्रियों को उपलब्ध कराया जाना एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए समय–समय पर पुरस्कार दिया जाना इस बात को इंगित करता है कि उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा में वृद्धि होना स्वाभाविक है। वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बच्चों के शैक्षणिक सामग्रियों का उपलब्ध न हो पाना उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा में नकारात्मक प्रभाव डालता है।

4. भौगोलिक स्थिति–

भौगोलिक स्थिति भी बच्चों के शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है। जहाँ उच्च शहर में पढ़ने वाले बच्चों को अच्छी विद्यालयों में दाखिला दिलाना तथा उच्च विद्यालयों में बच्चों को शिक्षा के प्रति अभिप्रेरित किया जाना एवं उनके माता–पिता द्वारा उनके शिक्षा के प्रति चिन्तित रहना एवं कक्षा में अव्वल आने के लिए प्रोत्साहित करना इस बात को इंगित करता है कि उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा उच्च होना स्वाभाविक है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा न होना एवं उनके माता–पिता एवं परिवार द्वारा

उन पर ज्यादा ध्यान न दिया जाना एवं उच्च स्तर के विद्यालयों का न होना भी उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

5. संवेगात्मक बुद्धि–

संवेगात्मक बुद्धि भी अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है। जहाँ उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में उच्च अभिप्रेरणा पाया जाना स्वाभाविक है जहाँ संवेगात्मक बुद्धि के तत्व स्व–जागरूकता, बल देना, स्व–अभिप्रेरणा, मूल्य–विन्यास एवं बचनबद्धता विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा में वृद्धि करता है। वहीं निम्न संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों में संवेग उसके अभिप्रेरणा को प्रभावित करता है एवं उनमें चिन्ता, तनाव एवं थकान जैसे संवेग उनके अभिप्रेरणा में रूकावट का कार्य करता है। कुछ शोध द्वारा इंगित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अलका (2011). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- जायसवाल, सीताराम (1970). *शिक्षा मनोविज्ञान*, लखनऊ : न्यू बिल्डिंग्स।
- पाठक, पी0डी0 (2008), *शिक्षा मनोविज्ञान*, द्वितीय संस्करण, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।